# शोध प्रारूप

# कुँड़ुख़ साहित्य में राम किशोर भगत का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

राँची विश्वविद्यालय, राँची

**शोध निर्देशक:-**

मनय मुण्डा

विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

**शोधार्थी:-**

लखन उराँव

एम. ए. कुँड़ुख़

यू.जी.सी नेट/जे.आर.एफ

स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग

राँची विश्वविद्यालय राँची

# कुँड़ुख़ साहित्य में राम किशोर भगत का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

## भूमिका

झारखण्ड की धरती प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। यहाँ की धरती में जहाँ एक ओर प्राकृतिक संसाधनों का अटूट भण्डार उपलब्ध है तो दूसरी ओर इस धरती में अनेक ऐसे व्यक्तित्व हुए जिन्होंने अपने कृतित्व से यहाँ की भाषा संस्कृति समाज, अध्यात्मक साहित्य और अन्य क्षेत्र में अपने योगदान से झारखण्ड के सभी क्षेत्रों को धनधान्य किया। इसलिए कहा जा सकता है कि झारखण्ड की धरती ऐसी रत्नगर्भा भूमि है जो सभी प्रकार के अवदानों से भरा हुआ है। इन्ही कारणों से झारखण्ड की अपनी विशिष्ट पहचान है।

झारखण्ड की धरती में अनेक ऐसे ज्ञात-अज्ञात व्यक्तित्व हुए जिनके योगदान से झारखण्ड का स्वर्णिम इतिहास बना है। यहाँ ऐसे ही अनेक व्यक्तित्व हुए जिन लोगों ने झारखण्ड को विकसित करने एवं समृद्ध करने में अपना विशेष योगदान दिया है। झारखण्ड में अनेक ऐसे रचनाकार सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक व्यक्ति हुए जिनके महत्वपूर्ण योगदान और विशेष भूमिका से झारखण्ड दिन प्रति दिन विकसित हो रहा है। ऐसे अनेक लोग हैं जिनका योगदान महत्वपूर्ण है परन्तु उनकी जीवनी व्यक्तित्व, कृतित्व और योगदान को बढ़िया ढंग से अध्ययन नही किया गया है। जबकि उनके कृतित्व और योगदान से झारखण्ड की धरती गौरान्वित हुई है। ऐसे व्यक्तित्व हर क्षेत्र में हुए है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म से लेकर राजनीति स्वतंत्रता संग्राम, समाज सुधार खेल, साहित्य एवं रचनाशीलता के क्षेत्र में उनके योगदान की विशेषताओं के अध्ययन से उनके महत्व को सहज ही समझा जा सकता है।

झारखण्ड के जनजातीय भाषा साहित्य में द्रविड भाषा परिवार के कुँड़ुख़ भाषा का विशेष स्थान है। कुँड़ुख़ भाषा का साहित्य विशेषकर लोक साहित्य बहुत ही समृद्ध है। इस साहित्य में लोकगीत, लोक कथा, लोकगाथा एवं अन्य साहित्यिक विद्याएं उपलब्ध है। इसी प्रकार कुँड़ुख़ शिष्ट साहित्य भी बहुत ही सशक्त एवं समृद्ध है। ऐसा माना जाता है कि शिष्ट साहित्य का मुख्य स्रोत लोक साहित्य है। चूंकि कुँड़ुख़ लोक साहित्य पारंपरिक रूप से समृद्ध है अतः स्वाभाविक रूप से इस भाषा का शिष्ट साहित्य भी सभी साहित्यिक विधाओं में समृद्ध और विकसित है।

कुँड़ुख़ भाषा झारखण्ड की प्रगतिशील माने जाने वाली उराँव जनजाति की भाषा है।उराँव जनजाति की भाषा कुँड़ुख़ को विकसित करने एवं इस भाषा साहित्य को समृद्ध करने में इस भाषा के रचनाकारों, भाषाविदों एवं शिक्षाविदों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस भाषा साहित्य को विकसित करने में हजारों हजार कवि, लेखक, साहित्यकार, कलाकार शिक्षाविद, बुद्धिजीवी सामाजिक, राजनीतिक एवं अध्यात्मिक लोगों ने योगदान दिया है और अभी भी ऐसे लोग अनवरत अपना योगदान दे रहे है।

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को समृद्ध करने वाले महान विभूतियों में महली लिविन्स तिर्की, भिखू तिर्की, मिखाएल कुजूर, पौलूस तोपनो, डॉ० उषा रानी मिंज, डॉ० एडविन वीडा, डॉ० ईशा बाला लकडा, डॉ० हरि उराँव, डॉ० नारायण भगत, डा० निर्मल मिंज, पियुष लकडा, डॉ० दिवाकर मिंज, बिहारी लकडा, प्रो० दुःखा भगत, अंगनी उराँव, सरन उराँव, बुधू उराँव, डॉ० प्रवीन उराँव, प्रो० महेश भगत, धर्मदास लकडा, गोपाल उराँव, प्रो० इन्द्रजीत उराँव, प्रो० बसंती कुजूर आदि की मुख्य भूमिका है। इन विद्वानों के अलावा अनेक विदेशी विद्वान ने भी अपना योगदान दिया है। इन लोगों के अतिरिक्त कई अन्य विद्वान हुए जिन्होंने कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को समृद्ध किया। इन्ही भाषा साहित्य एंव शिक्षाविदों और समाज सेवियों में एक प्रमुख नाम राम किशोर भगत है। रामकिशोर भगत विगत 36 वर्षों से

प्राध्यापक के रूप में सेवारत है। कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। रांची विश्वविद्यालय के सीनेट सदस्य, भाषा साहित्य एंव पाठयक्रम निर्माण समिति के सदस्य, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग कोल्हान विश्वविद्यालय, झारखण्ड शिक्षा एवं शोध प्रशिक्षण परिषद, झारखण्ड कर्मचारी चयन आयोग पाठयक्रम निर्माण समिति के सदस्य विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक समितियों के कार्यकारी सहित दर्जनों समितियों, संगठनों से जुड़कर भगत ने कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास एंव झारखण्ड की सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है।

राम किशोर भगत द्वारा रचित प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित है:-

1. कुँड़ुख़ संस्कार गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन

2. वीर बुधू भगत की संघर्षगाथा

3. जनजातीय नायक

4. शहीद वीर बुधू भगत का जीवन और दर्शन

5. पुरखा डण्डी (कुँड़ुख़ लोकगीत संग्रह)

6. वीर पानी संपादित पत्रिका

7. उराँव जनजाति की पारंपरिक व्यवस्था

इनके अतिरिक्त रामकिशोर भगत की अनेक रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। राम किशोर भगत को उराँव जनजाति और कुँड़ुख़ भाषा के प्रति अटूट लगाव है। ये अपनी मातृभाषा कुँड़ुख़ एवं उराँव जनजाति के समग्र विकास और इसे राष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

## 2. अनुसंधानिक विषय :-

द्रविड़ भाषा परिवार को मुख्य भाषा कुँड़ुख़ का पुराना एवं स्वर्णिम इतिहास रहा है। कुँड़ुख़ भाषा साहित्य की पारंपरिक कृतियों का अध्ययन किया जाए तो इसकी प्राचीनता मौलिकता एवं विषय वस्तु की महता को सहज ही समझा जा सकता है। इस भाषा के विभिन्न बिन्दुओं पर अनेक शोध कार्य हुए है और अब भी निरंतर शोध अध्ययन हो रहा है जिससे कि कुँड़ुख़ भाषा साहित्य, साहित्यकारों एंव इस क्षेत्र में अनेक ऐसे तथ्यों का प्रस्फुटन हो रहा है जो इस भाषा साहित्य की ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है।

शोध कार्य प्रत्येक मानव समाज और राष्ट्र के लिए अध्ययन आवश्यक है। शोध आधारशीला की महत्व एवं उपोगिता ही शोध कार्य की नींव है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुरानी वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुनः परीक्षण कर नवीन ज्ञान प्राप्त कराना ही शोध है। शोध कार्य के बिना ज्ञान एवं विकास असंभव प्रतीत होता है।

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास के कई आयाम हैं। भाषायी विकास, भाषायी आन्दोलन, साहित्यिक विकास एवं इसमें योगदान प्रदान करने वालों की भूमिका आदि ऐसे तथ्य है जो अनुसंधान के विषय है। इस दिशा में रामकिशोर भगत द्वारा अनेक स्तर पर कार्य किए गए जो कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास मार्ग में मील का पत्थर कहे जो सकते है। इन जमीन विषयों का शोध अध्ययन विश्लेषण, मूल्यांकन और नये तथ्यों का प्रकाशन ही इस शोध अध्ययन का अनुसंधानिक विषय है। भाषा साहित्य मानव वातावरण की नीरसता, एकरसता, उबाउपन को दूर कर जीवन में सरसता और समरसता लाता है तथा उमंग एवं उत्साही परिवेश का निर्माण करता है। भाषा साहित्य और साहित्यकारों की कृतियां केवल शब्द समुच्चय भर नही है बल्कि यह समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन भी करता है। इसलिए कहा भी जाता है कि समृद्ध साहित्य सशक्त समाज और राष्ट्र का धोतक होता है और साहित्यकार इनके स्तभं होते हैं। उक्त सभी बिन्दुओं पर गहन अध्ययन एवं शोध करना ही

इसका अनुसंधानिक विषय है। इस प्रकार के सभी तथ्यों एंव पक्षों का शोध अध्ययन के द्वारा प्रकाशन मुख्य अनुसंधानिक विषय है।

**3. प्रेरणा :-**

झारखण्ड की धरती मेरी जन्मभूमि एवं कर्म भूमि है एवं यहां की प्रमुख जनजातियों में उराँव एक मुख्य जनजाति है जिनकी भाषा कुँड़ुख़ है। कुँड़ुख़ द्रविड़ भाषा परिवार की मुख्य भाषा है। मेरी मातृभाषा कुँड़ुख़ है और बाल्यावस्था से ही कुँड़ुख़ भाषा के प्रति विशेष लगाव रहा है। मातृभाषा कुँड़ुख़ होने एंव इससे विशेष लगाव होने के कारण मैंने इस भाषा में स्नातकोतर तक की पढाई की है। इस क्रम में युजीसी नेट की परीक्षा भी उत्तीर्ण हुए। कुँड़ुख़ भाषा में अध्ययन के क्रम में मुझे कुँड़ुख़ भाषा को और अधिक निकट से जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ। स्नातकोतर शिक्षण कालावधि में मैं प्रेरित हुआ कि कुँड़ुख़ भाषा के क्षेत्र में साहित्य एवं साहित्यकारों की जीवनी उनकी भूमिका और योगदान को और भी गहराई से अध्ययन किया जाए, इसकी भावना से प्रेरित होकर मुझे इस शोध अध्ययन की प्रेरणा मिली। कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास में अनेक रचनाकारों की मुख्य भूमिका है। इस भाषा के अनेक ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने न केवल साहित्य सृजन किया बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रामकिशोर भगत इन्हीं प्रमुख रचनाकारों में एक है जिन्होंने न केवल कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को समृद्ध किया बल्कि निरंतर कुँड़ुख़ भाषियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक साहित्यिक विकास में सक्रिय है। इनकी रचनाशीलता और कार्यशीलता से प्रभावित प्रेरित हुआ कि भगत की जीवनी, व्यक्तित्व, कृतित्व, कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के विकास में भूमिका उराँव जनजाति की सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षणिक अध्यात्यिक विकास में उनके योगदान पर शोध अध्ययन करूं। इस विषय पर अपने गुरूजनों साथी विधार्थियों एवं विभिन्न सामाजिक जानकारों से

भी चर्चा किया और सभी से प्रेरित होकर कुँड़ुख़ सहित्य में राम किशोर भगत की रचनाशीलता एवं सामाजिक सांस्कृतिक योगदान पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ।

**4. परिकल्पना :-**

किसी भी शोध कार्य क्षेत्र को निश्चित दिशा प्रदान करने में परिकल्पना का अत्यन्त महत्पूर्ण स्थान है। परिकल्पना शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। परिकल्पना, इसमें परि का अर्थ है चारों ओर और कल्पना का अर्थ है चिन्तन या विचार। इस प्रकार परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है चारों ओर से चिन्तन या विचार। रामकिशोर भगत की जीवनी और उनके योगदान संबंधी विषय पर शोध अध्ययन से प्रेरित होने के पश्चात मेरे मन में शोध की परिकल्पना आकार लेने लगी। मेरी इस परिकल्पना को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करने में मेरे गुरूजनों ने महत्वपूर्ण दिशा निर्देश एवं आशीर्वाद प्रदान किया। विशेषकर जनजातीय एव क्षेत्रीय भाषा संकाय के समन्वयक डॉ० हरि उराँव, स्नातकोतर कुँड़ुख़ विभाग के सहायक प्राध्यापक, डॉ० बन्दे खलखो आदि ने मुझे इस विषय पर शोध अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित एवं यथोचित मार्ग दर्शन किया जिससे मेरी परिकल्पना को शोध करने हेतु आकार प्राप्त हो गया।

कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एंव उराँव जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक विकास में राम किशोर भगत का योगदान, जीवनगाथा एवं साहित्य संसार पर शोध की परिकल्पना से जिज्ञासा और आकांक्षा स्वाभाविक रूप से बलावती होती गई। इस प्रबल जिज्ञासा और आकांक्षा की परिकल्पना से ऐसा प्रतीत हुआ कि भाषा साहित्य एवं सरना, समाज के लिए भगत की जीवनी और योगदान का सभ्यक अध्ययन एवं विश्लेषण एक महत्वूपर्ण और आवश्यक कार्य है। इस कार्य एवं आवश्यकता की पूर्ति के लिए तथ्यों के संग्रहण विवेचन और तथ्यपरक प्रस्तुति की परिकल्यता ही शोध कार्य करने के लिए तत्पर किया।

**5. उद्देश्य :-**

राम किशोर भगत की रचनाशीलता और समाजिक सांस्कृतिक योगदान पर शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इस शोध अध्ययन के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है:-

1. कुँड़ुख़ भाषा साहित्य का गहन अध्ययन।

2. कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के महत्व को दर्शाना एवं इनके संकलन, संचयन, और मूल्यांकन की दिशाएं प्रस्तुत करना।

3. कुँड़ुख़ साहित्य के साहित्यसेवी राम किशोर भगत जी के जीवन एवं साहित्य के माध्यम से झारखण्डी जनजीवन एवं सामाजिक सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

4. सरना समाज को संगठित करने की दिशा में राम किशोर भगत के योगदान को प्रकाशित करना।

5. झारखण्ड के सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य का अवलोकन एंव इसमें कुँड़ुख़ भाषा साहित्य और साहित्यकार का अध्ययन, विश्लेषण एवं प्रकाशन ।

6. राम किशोर भगत के वैयक्तिक विशेषताओं, वाचा विशेषताओं, आन्तरिक विशेषताओं, विनम्रता, शालीनता एवं सामाजिक दायित्व भावना जैसी बिन्दुओं की विवेचना, विश्लेषण एवं मूल्यांकन

**6. शोध का महत्व:-**

कुँड़ुख़ साहित्य में राम किशोर भगत का जीवन एवं साहित्य शोध एक अध्ययन अनेक दृष्टि से अत्यन्त महत्व है। इस शोध अध्ययन के महत्व को निम्नलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है:-

1. इस शोध अध्ययन से कुँड़ुख़ भाषा साहित्य की पौराणिक पृष्ठभूमि का का प्रकाशन होगा।

2. द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं में कुँड़ुख़ भाषा के विभिन्न आयामों की जानकारी प्राप्त होगी।

3. कुँड़ुख़ भाषा के साहित्यकारों की संघर्षमय जीवन एवं प्रयासों का सामान्य रूप से और रामकिशोर भगत के संघर्षमय जीवन, साहित्य सेवा का विशेष रूप से अनेक तथ्य स्पष्ट होगे।

4. समकालीन कुँड़ुख़ भाषा-भाषियों एवं साहित्यकारों के साहित्य समीक्षा शोध कार्य के लिए आदर्श सिद्ध होगा।

5. अपनी निज मातृभाषा एवं संस्कृति के प्रति रुझान में बढ़ोतरी होगी एवं नयी जागृति उत्पन्न होगी।

6. अन्य झारखण्डी भाषाओं के शोध हेतू प्रेरणादायक साबित होगा।

7. साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।

8. भाषा, कला संस्कृति, साहित्य एवं लेखन के क्षेत्र में सक्रिय शिक्षकों, छात्रों शोधार्थियों के लिए अनेक तथ्यों एवं विचारों की प्रस्तुति होगी जोकि वर्तमान एवं भावी आदर्शों की अवधारणा एवं रूप रेखा की प्रस्तुति करेगा।

**<u>7. शोध विधि:-</u>**

1. अवलोकन विधि

2. साक्षात्कार विधि

3. संदर्भ ग्रन्थों का अध्ययन

4. शिक्षाविदों से संपर्क एंव संवाद

5. संबंधित विषयक आलेख

6. प्रश्नावली विधि

7. विश्लेषणात्मक अध्ययन

8. विवरण प्रस्तुति

9. तुलनात्मक अध्ययन विधि

10. आलोचनात्मक विधि

**8. शोध के उपादान /उपाकरण:-**

1. पेन, कॉपी

2. कैमरा, कम्प्यूटर

3. संदर्भ ग्रन्थ

4. शोध आलेख

5. विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं

6. सामाजिक, सांस्कृतिक विषयक आलेख

7. पुस्तकालय

8. प्रासंगिक सामग्री अन्य वैधानिक साधन

**अध्यायीकरण :-**

शोध विषय - कुँड़ुख़ साहित्य में राम किशोर भगत का जीवन एवं साहित्य : एक अध्ययन

**प्रस्तावना**

क. प्रेरणा एवं शोध का औचित्य

ख. शोध की विषय वस्तु

ग. शोध विधि

घ. विषय से संबंधित पूर्व शोध कार्यों का विवरण

ड विषय विश्लेषण

**प्रथम अध्याय**

**कुँड़ुख़ भाषा एवं साहित्य की विकास-परंपरा**

क. लोक साहित्य

ख. शिष्ट साहित्य

**द्वितीय अध्याय**

**राम किशोर भगत – व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

क. जन्म, परिवार एंव पारिवारिक पृष्ठभूमि

ख. वाल्यावस्था, किशोरावस्था एंव युवावस्था

ग.	शिक्षा/आजीविका

घ	कुँड़ुख़ भाषायी आन्दोलन में योगदान

ड	कुँड़ुख़ भाषा संस्थाओं में भूमिका

च.	कुँड़ुख़ भाषा की ओर झुकाव एवं प्रेरणा

छ.	कुँड़ुख़ भाषा साहित्य व संस्कृति के विकास में योगदान

**तृतीय अध्याय**

**राम किशोर भगत के पद्य साहित्य का विश्लेषण**

पद्य साहित्य

1.	प्रमुख कविताओं का अध्ययन

2.	काव्य का भाव पक्ष

4.	काव्य का कला पक्ष

3.	काव्य के अन्य पक्ष

**चतुर्थ अध्याय**

गद्य साहित्य

राम किशोर भगत के गद्य साहित्य का विश्लेषण

1.	कहानी

2.	संस्मरण

3. निबंध

4. एकांकी

5. यात्रा वृत्तांत

6. लघु कथा

7. जीवनी

8. प्रकाशित कृतियों का विवरण/विश्लेषण

9. अप्रकाशित कृतियों विवरण/विश्लेषण

10. पत्र - पत्रिकाओं में उनके लेखों का विवरण/विश्लेषण

**पंचम अध्याय**

**राम किशोर भगत की समकालीन परिस्थितियाँ और उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त समस्याएँ**

क) पारिवारिक स्थिति

ख) सामाजिक स्थिति

ग) सांस्कृतिक स्थिति

घ) धार्मिक स्थिति

ङ) राजनीतिक स्थिति

**षष्ठम् अध्याय**

**राम किशोर भगत की वैयक्तिक विशेषताएं**

क. बाह्य विशेषताएं

ख. आंतरिक विशेषताएं

- स्वाभिमानी
- दृढनिश्चयी
- संवेदनशील
- न्यायप्रिय एवं कर्तव्यपराणयता
- विनम्रता
- सामाजिक दृष्टिकोण
- अध्यात्मिक आमरण
- शैक्षणिक सामाजिक दायित्व

**सप्तम अध्याय**

**कुँड़ुख़ भाषा साहित्य में राम किशोर भगत का स्थान**

क. पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव

ख. समकालीन कवियों का परस्पर प्रभाव

ग. भावी साहित्यकारों के लिए विरासत

घ. कुँड़ुख़ साहित्य जगत में रामकिशोर भगत का स्थान

निष्कर्ष/उपसंहार

परिशिष्ट

चित्रावली

आधार ग्रन्थ

संदर्भ ग्रन्थ/पत्र-पत्रिकाएं

नोट - आवश्यक होने पर शोध प्रारूप में कुछ परिवर्तन किये जा सकते है।


शोध निर्देशकः-

मनय मुण्डा
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थीः-

लखन उराँव
एम. ए. कुँड़ुख़
यू.जी.सी नेट/जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय राँची

# आधार ग्रंथों की सूची


| क्र. स. | लेखक | रचना | प्रकाशक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कुमारी, डॉ० समरिता | कवि रत्न शारदा प्रसाद शर्मा व्यकित्व एवं कृतित्व | के.के पब्लिकेशन इलाहाबाद | 2013 |
| 2 | केशरी, डॉ० विशेश्वर प्रसाद | कविरत्न डॉ० शारदा प्रसाद शर्मा एवं अंतरंग आकलन | | 1996 |
| 3 | केसरी, डॉ० सविता | नागपुरी कवि कंचन जीवन एवं साहित्य | नागपुरी संस्थान | 2013 |
| 4 | खलखो, डॉ० बन्दे | कुँड़ुख़ शिष्ट साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन | | 2021 |
| 5 | गिरिराज, डॉ० गिरिधारी राम गौन्झू | पीटर शांति नवरंगी व्यकितत्व एवं कृतित्व | नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची | 1990 |
| 6 | तिवारी, डॉ० उमेश नन्द | आधुनिक नागपुरी साहित्य संर्दभ प्रफुल्ल कुमार राय एक मूलयाकन | झारखण्ड झरोखा राँची | 2014 |
| 7 | साहु, डॉ० पंचम | पाण्डेय दुर्गा राय व्यकितत्व एवं कृतित्व | | 2001 |
| 8 | साहु, डॉ० सुखदेव | भुनेश्वर अनुज व्यकितत्व एवं कृतित्व | | 2003 |
| 9 | भगत, महेश | कुँड़ुख़ भाषा साहित्य का उद्भव और विकास | | 2016 |

## **<u>संदर्भ ग्रन्थों की सूची</u>**

| क्र. सं. | लेखक | पुस्तक | प्रकाशक | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | उराँव, डॉ० हरि | हिन्दी भाषा और कुँड़ुख़ भाषा क्रियाओं का प्रकरात्मक अध्ययन | के.के. पब्लिकेशन, इलाहाबाद | 2010 |
| 2 | कुजूर, मिखाएल | उराँव संस्कृति | कृषि विकास केन्द्र भूसाड़, लातेहार | 2006 |
| 3 | केशरी, डॉ० वी.पी. | झारखण्ड की भाषाओं की समस्याएं और संभावनाएं | ज्योति प्रकाशन, रांची | 1992 |
| 4 | टेटे, वन्दना | झारखण्डी भाषा, साहित्य संस्कृति अखड़ा अंक-1 | | 2017 |
| 5 | तिरकी, भिखू | उराँव सरना धर्म और संस्कृति | झारखण्ड झरोखा राँची | 2011 |
| 6 | तिरकी, महली लिवन्स | आदिवासी और उनकी भाषाएं | सत्यभारती प्रकाशन, राँची | 2011 |
| 7 | तोपनो, पौलुस | छोटानागपुर के आदिवासी | सत्यभारती प्रकाशन, राँची | 1984 |
| 8 | भगत, डॉ० राम किशोर | कुँड़ुख़ संस्कार गीतों का सॉस्कृतिक अध्ययन | आइ०एस०डी० आर० रांची | 2021 |
| 9 | भगत, डॉ० राम किशोर | वीर बुधू भगत संघर्ष गाथा-वीरपानी | प्रकाशन, राँची | 2022 |
| 10 | मुण्डा, डॉ० राम दयाल | आदिवासी अस्मिता और झारखण्डी अस्मिता के सवाल | प्रकाशन संख्यान दिल्ली | 2002 |
| 11 | मिंज, फा० अलविनुस | झारखण्ड विरासत | जोशी प्रिन्टर्स, राँची | 1994 |
| 12 | शर्मा, डॉ० विमल चरण | झारखण्ड की जनजातियां | झारखण्ड झरोखा राँची | 2014 |

## संदर्भ पत्र - पत्रिकाओं की सूची

| क्र. सं. | पत्रिका | संपादक | प्रकाशक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कुँड़ुख़ डहरे | उराँव , डॉ० हरि / शांति खलखो | | |
| 2. | बकपून | उराँव, डॉ० हरि | | 2011 |
| 3. | सरना फूल | उराँव, डॉ० हरि | सरना नवयुवक संघ, | 1987 |
| 4. | सखुआ | उराँव, डॉ० हरि | | |
| 5. | पड़हा पत्रिका | खलखो, डॉ० बन्दे | | |
| 6. | अखड़ा | टेटे, वन्दना | | |
| 7. | सरहुल पत्रिका | तिर्की, महली लिवन्स | | |
| 8. | नाम कुँड़ुख़त | तिर्की, डॉ० अगापित | | 1999 |
| 9. | घर बंधु | तोपनो, एस० | | |
| 10. | वीर पानी | भगत, डॉ० राम किशोर | | |
| 11. | सरहुल | मजीद, डॉ० इलियास | | |
| 12. | स्थानीय दैनिक पत्र राँची एक्सप्रेस प्रभात खबर, दैनिक आज, हिन्दुस्तान, दैनिक भास्कर आदि। | | | |